बाबा मुक्तानन्द द्वारा प्रदान की गईं सिखावनियाँ

सिद्धयोग पथ पर, अक्टूबर का माह बाबा मुक्तानन्द को, उनके असामान्य जीवन व उनकी परम्परा को याद करने व उनका सम्मान करने के लिए समर्पित किया जाता है। इसी माह में बाबा जी ने महासमाधि ली — महासमाधि यानी परम चिति के साथ महाऐक्य।

बचपन से ही बाबा जी में भगवान को जानने की तीव्र ललक थी। सबके हृदय में विद्यमान दिव्यता के साथ ऐक्य साधने के लिए उन्होंने स्वयं को आध्यात्मिक साधना के प्रति समर्पित किया। अपने शुद्धतम् स्वप्रयत्न द्वारा व अपने सद्गुरु, भगवान नित्यानन्द की कृपा द्वारा बाबा जी सिद्धयोग गुरु बने, ऐसे गुरु जिनमें शक्तिपात दीक्षा रूपी महाप्रसाद द्वारा दूसरों को जाग्रत करने का सामर्थ्य होता है।

सिद्धयोग पथ अनोखा मार्ग है चूँकि 'शक्तिपात' इसकी प्रेरक शक्ति है; शक्तिपात यानी सिद्धयोग गुरु की कृपा द्वारा साधक की आन्तरिक शक्ति की अर्थात् कुण्डलिनी शक्ति की जागृति। एक बार कुण्डलिनी जाग्रत हो गई तो साधक का ध्यान सहज — स्वाभाविक होने लगता है। यह आन्तरिक शक्ति हमारे प्रयत्नों को मार्गदर्शित करती है व उन्हें सम्बल प्रदान करती है ताकि हम विशिष्ट वृत्तियों से बद्ध हुए मन की सीमितताओं से परे जाकर अपनी अन्तरतम आत्मा का यानी शुद्ध चिति का ज्ञान प्राप्त करें।

बाबा जी की सिखावनियों को पढ़ते हुए मनन करें कि आप बाबा जी के शब्दों में से ऐसी कौन-सी बात सीख सकते हैं जो आपके अध्ययन को व ध्यान के अभ्यास को उन्नत बनाएगी।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।